International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आदिवासी समाज एवं उनकी समस्याएं

डा॰0 अनीता बिष्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
पं0 पूर्णानन्द तिवारी राजकीय महाविद्यालय दोषापानी नैनीताल

सारांश-

आदिवासी शब्द दो शब्दों 'आदि' और 'वासी' से मिल कर बना है इसका अर्थ मूल निवासी होता है। भारत की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत (10 करोड़) भाग आदिवासियों का है। भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' शब्द का उपयोग किया गया है। ये आदिवासी मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, नागालैण्ड, अरूणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मेघालय, गुजरात बिहार आदि राज्यों में निवास करते हैं। सामान्य रूप से आदिवासी उसे कहते है जो जंगलो में अपना जीवन यापन करते हैं। सामान्य जीवन शैली जीते हंै, समान संस्कृति, समान भाषा का प्रयोग करते हैं, तथा जल, जीवन, जंगल से जुडे रहते है। भारत के आदिवासियों की समस्याएँ बहुत कठिन है और उनके रीति-रिवाज, रहन-सहन, सभ्यता, आचार-विचार, संस्कृति, धर्म, कला आदि मे सुधार की आवश्यकता है। सभ्य समाज के सम्पर्क में आने के कारण आदिवासी समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो गयी है।

मुख्य शब्दः- आदिवासी, समुदाय, समस्याएँ, जीवन शैली, संस्कृति

शोध प्रविधिः- शोध पत्र का विषय ''आदिवासी समाज एवं उनकी समस्याएँ'' है। प्रस्तुत शोध पत्र मे प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामग्री का प्रयोग किया गया है एवं वर्णानात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्यः- प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है-

1. आदिवासी समाज की सामूहिक जीवन शैली एवं संस्कृति का अध्ययन करना।
2. आदिवासी समुदाय की प्रमुख समस्याओं का अध्ययन करना।
3. आदिवासी समाज की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।

प्रस्तावना- सामान्य भाषा में "आदिवासी" शब्द का प्रयोग किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है, जिनका उस भौगोलिक क्षेत्र से बहुत पुराना सम्बन्ध रहा है, किन्तु संसार के विभिन्न स्थानों क्षेत्रों से आकर लोग बसे हों उस विशिष्ट भाग के प्राचीनतम या प्राचीन निवासियों के लिए भी इस शब्द का उपयोग किया जाता है। आदिवासी भारतीय उपमहाद्वीप की जनजातियों के लिए सामूहिक शब्द है, जिन्हें भारत के अन्दर उन जगहों के लिए स्वदेशी माना जाता है जहां वे रहते हैं, या तो वनवासी या आदिवासी गतिहीन समुदायों के रूप में।

सरल शब्दों में आदिवासी समाज हम उस समुदाय को कहते हैं, जो पहाड़ी व जंगली क्षेत्र में रहते हैं, जिनकी अपनी एक अलग संस्कृति, धर्म, भाषा और नृजातीय पहचान होती है। कुछ विद्वान आदिवासी की व्याख्या एक ऐसे सामाजिक समूह से करते हैं, जिसका एक निश्चित क्षेत्र में निवास पाया जाता हैं जिनकी पहचान अन्तर्वैवाहिक होती है। साथ ही इनमे कोई विशिष्टीकरण नहीं होता। इन समूहों पर आदिवासी मुखियाओं का राज चलता है। ये मुखिया वंशानुगत होते हैं। भारत में आदिवासियों को अनेक

नामों से पुकारा जाता है। ऐबोरिजिनल, इंडिजिनस, देशज, मुल निवासी, जनजाति, जंगली, गिरिजन, बर्बर आदि इम्पीरियल गजेटियर के अनुसार-"एक आदिम जाति परिवारों का एक समूह है, जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलतें है तथा एक सामान्य क्षेत्र में या तो वास्तव में रहते हैं या अपने को उसी क्षेत्र से सम्बन्धिम मानतें है तथा ये समूह अंतर्विवाही होते हैं।" इनके अनुसार एक जैसी पहचान रखने वाले आदिवासी कहलातें हैं।

सामान्य रूप से आदिवासी उसे कहते हैं जो जंगलो में अपना जीवन यापन करते हैं समान भाषा का प्रयोग करते हैंए समान सामाजिक सांस्कृतिक जीवन जीते हैं तथा जलए जंगलए जमीन से जुड़े हुए है। भारत में आदिवासीयों का इतिहास संघर्ष का इतिहास रहा है। सदियोें पहले आदिवासियों को सभ्यता से बहिष्कृत कर जंगलों में धकेल दिया गया। इन जन.समुदायों ने जंगलों में रहते हुए अपनी संस्कृति की विरासत कायम रखी और पूरे आत्म.सम्मान के साथ जीते रहें।

<u>आदिवासी समाज की समस्याएँः-</u>

आदिवासी जब बाहरी समूहों के सम्पर्क मे आये तब से उनमें कुछ समस्याएँ आ गयी है, और उनके रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, कला आदि मंे सुधार की आवश्यकता है, सभ्य समाज के सम्पर्क में आने के कारण उनके सामने अनेक समस्याएँ खड़ी हो गयी हैं। बाहरी समाज की संस्कृति के सम्पर्क में आने की वजह से वह अपनी संस्कृति का त्याग करते जा रहे हैं। आदिवासियें की समस्याओं के अपने कारण है जो इस प्रकार हैः-

1.**<u>ईसाई मिशनरीः-</u>** आदिवासी समाज में ईसाई मिशनरियों ने सेवा का काफी कार्य किया, और इसी सेवा कार्य की आड़ में उन्होंने आदिवासियों की अज्ञानता, पिछड़ेपन का फायदा उठाया और अपने धर्म का उनके बीच काफी प्रचार-प्रसार का कार्य किया जिस कारण आदिवासियों के जीवन में संस्कृतिकरण की अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई।

2.**<u>पहाड़ो एवं जंगलों में निवास स्थानः-</u>** ज्यादातर आदिवासी समुदाय दुर्गम स्थानों पर निवास करते हैं। दूर जंगलों एवं पहाड़ी स्थानों में रहने के कारण ये यातायात व संचार के साधनो से बहुत दूर रहने के कारण आदिवासियों को स्वयं अपने जीवन यापन के साधन जुटाने पड़ते हैं, जो कि एक बहुत बड़ी समस्या है।

3.**<u>बाहरी लोगों द्वारा शोषणः-</u>** आदिवासी समाजों में बाहरी समूहों के प्रवेश से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हंै। कई प्रकार के बाहरी समूह जैसे-व्यापारी, ठेकेदार, महाजन आदि आदिवासियों की अशिक्षा, पिछड़ेपन और उनके भोलेपन का फायदा उठाकर उन्हे अपनी ओर आकर्षित करते हैं, इस वजह से इस समाज में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। स्त्रियों का फैशन के प्रति बढ़ता झुकाव एवं पुरुषों की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण उनकी जरूरत पूरी नही कर पाना पारिवारिक कलह का कारण बन जाता है, अनेक अन्य इसी प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हंै।

4.**<u>नवीन शासन व्यवस्थाः-</u>** आदिवासी समाज में अंग्रेजी शासन काल से ही नवीन शासन व्यवस्था को लागू किया गया। इसकी वजह से अनेक प्रकार के सरकारी अफसर जैसे अधिकारी आदिवासी समुदाय मे

गये, किन्तु अधिकांश अधिकारी आदिवासियों की संस्कृति से अनजान थे जिस कारण वह अधिकारी उन्हे पूर्ण रूप से संतुष्ट नही कर पाये और इस वजह से आदिवासी समाज में असन्तोष उत्पन्न हो गया।

5.**आधुनिक सभ्यसमाज से संबंधः-** आदिवासी समाज पर हिन्दु एवं पाश्चात्य सभ्यता का काफी प्रभाव पड़ा है। ये दोनों ही आदिवासी समाज की संस्कृति से भिन्न है, आधुनिक एवं सभ्य समाज की संस्कृति एवं उसकी चमक-धमक से आदिवासी समुदाय काफी प्रभावित हुए जिसका परिणाम यह है कि आज वह अपनी संस्कृति एवं सभ्य समाज की संस्कृति के बीच फस कर रह गये है।

आदिवासी समाज की अन्य समस्याऐंः-

1. आर्थिक समस्याएँ
2. सामाजिक समस्याएँ
3. धार्मिक समस्याएँ
4. सांस्कृतिक समस्याएँ
5. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ
6. शिक्षा संबंधी समस्याएँ

आज आदिवासी समुदाय सबसे विकट स्थिति से गुजर रहा है। जल, जमीन, जंगल उनकी सबसे बड़ी समस्या है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक प्रगति के फलस्वरूप बढ़ते ओद्यौगीकरण, आधुनिकीकरण ने आदिवासी-उपस्थिति को बड़ा छोटा बना दिया है। उनकी मूल संवेदनाओं, भावनाओं कल्पनाओं को कुठित कर दिया हैं आदिवासी समाज आज अपने अस्तित्व को बचाने के लिए राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में अनेक समस्याओं और विषमताओं से जूझ रहा है। आदिवासी समाज को सबसे ज्यादा निराश सत्ता एवं राजनीति ने किया है। सरकार द्वारा विकास के नाम पर की जाने वाली अनेक घोषणाओं के बावजूद भी आदिवासी समुदाय सभ्यता की रोशनी से कोसांे दूर, आदिमयुगीन ढर्रे पर जीवन जीने के लिए मजबूर है।

निष्कर्ष - आदिवासी समाज अपनी संस्कृति की अनोखी मान्यताओं, परम्पराओं एवं संस्कारों से आज भी जीवित है। भारत के समस्त विभिन्न अंचलो में आदिवासी जन-समुदाय बिखरे पड़े हैं जिनमें अधिकांश का परस्पर कोई सम्पर्क नहीं है। इन समुदायांे की सांस्कृतिक जीवन शैली में कमोवेश अन्तर दिखाई देता है फिर भी इनका समेकीकृत स्वरूप आदिवासी जन को एक छवि को इंगित करता है। भारत में आदिवासियों का इतिहास संघर्ष का इतिहास रहा है। एक पराजित समूह होते हुए भी आदिवासी समाज ने अपनी भाषा, संस्कृति, परम्पराऐं, रीति-रिवाज, जीने की सामूहिक शैली, की इस विरासत को जिंदा रखा है। आदिवासी समाज के अस्तित्व की रक्षा के लिए जरूरी हैं कि उनकी संस्कृति, भाषा, परम्परा, रीति-रिवाज, सामूहिक जीवन शैली आदि में बिना हस्तक्षेप किए उनकी उन्नति के लिए काम किया गया है।

सन्दर्भ-ग्रंथ-

1. डा॔0 मुकेश सागर, "आदिवासी समाज में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास के विविध पक्षों का मूल्यांकन" इण्टरनेशनल जरनल आ॔॔फ साइन्टिफिक और इनोवेटिव रिसर्च स्टडीज वा॔ल्युम-6 न0-1 जनवरी 2018, पेज नं0 146।
2. नदीम हुसैनः जनजातिय भारत, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 11, आठवाँ संस्करण, 2013
3. डा॔0 जनक सिंह मीना एवं डा॔0 कुलदीप सिंह मीनाः भारत के आदिवासी चुनौतियाँ एवं सभवानाएं, वाडी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 234, प्रथम संस्करण, 2017
4. डा॔0 हरिश चन्द्र उप्रेदीः भारतीय जनजातियाँ संरचना एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृष्ठ 03, तृतीय संस्करण, 2007
5. डा॔0 स्वपना मीना, आर्थिक संदर्भ में आदिवासी महिलाओं के दायित्व, 15त्ज्प्, वा॔ल्युम-7, ईशु-5, पृष्ठ सं0 684, 2022
6. ज्योति राठौर और डा॔ 0 वीणा छंगाणीः आदिवासी समाज का यथार्थः रणेन्द्र कृत "ग्लोबल गांव के देवता" के सन्दर्भ में, इण्टरनेशनल जरनल आ॔फ एडवांश स्टडीस, पृष्ठ 362, 2020
7. गंगा सहाय मीना (सं 0)ः आदिवासी साहित्य विमर्श , अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर प्रा0 लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014, प्रष्ठ 37
8. खन्ना प्रसाद अमीन: आदिवासी साहित्य, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ 24
9. रमणिका गुप्ता: आदिवासी साहित्य माला, राधकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014 पृश्ठ 25